



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

कोटा शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन

*¹ डॉ. बृजसुन्दर गौतम

*¹ सह आचार्यए जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, लखावा, कोटा, राजस्थान भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 20/Aug/2025

Accepted: 21/Sep/2025

सारांश:

कोटा शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान लगभग समान है। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों पर उनके पारिवारिक, शैक्षिक विद्यालय वातावरण का समान प्रभाव पड़ता है। साथ ही अभिभावक, छात्र व छात्राओं में भेद नहीं कर समान रूप से शैक्षिक अवसर प्रदान करते हैं। उपर्युक्त सभी कारणों से शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों का अध्ययन की तुलना करने के लिए दोनों का मध्यमान तथा प्रमाप विचलन ज्ञात कर टी मान निकालने पर उनमें अधिक अन्तर नहीं पाया गया इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। उपर्युक्त निष्कर्ष से स्पष्ट होता है।

*Corresponding Author

डॉ. बृजसुन्दर गौतम

सह आचार्यए जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर
टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, लखावा, कोटा,
राजस्थान, भारत।

मुख्य शब्द: अध्ययन आदतें, उच्च माध्यमिक स्तर, शहरी क्षेत्र

प्रस्तावना:

शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत हैं जो जीवन का विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शन करता हैं। शिक्षा के द्वारा प्राप्त प्रकाश से हमारे संशयों का उन्मूलन एवं कठिनाईयों का निवारण होता हैं और जीवन के वास्तविक महत्व को समझने की शक्ति उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार कहा जाए तो शिक्षा समाज में चलने वाली अनवरत प्रक्रिया हैं, जिससे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये बालक के विकास का प्रयास किया जाता हैं। समाज के अनुकूल बालक के विकास का प्रयास किया जाता हैं। समाज के अनुकूल बालक के व्यवहार को परिवर्तित करके उसे समाज का एक मानवीय व स्वीकृत सदस्य बनाया जाता हैं परन्तु आज के इस आधुनिक युग में बालक के व्यक्तित्व में जो परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं, वे महत्वपूर्ण अंग हैं।

शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के शिक्ष धातु से बना हैं जिसका अर्थ हैं सीखना या सिखाना। शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा मानव की छिपी हुई शक्तियों को विकसित किया जाता हैं। उसे नये ज्ञान कुशलताओं, मूल्यों, आदर्शों आदि को सिखाया जाता हैं

जिससे की वह अपने वातावरण पर अधिकार पा सके। समाज में अपना सही स्थान प्राप्त कर सके और मानव जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। फ्रोबेल के अनुसार, “शिक्षा एक प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा एक बालक अपनी शक्तियों का विकास करता हैं।” शिक्षा राष्ट्र की उन्नति का महत्वपूर्ण साधन हैं तथा उसके व्यक्तित्व के विकास में योगदान करती हैं। शिक्षा बालक की अत्रतनिहित शक्तियों को उभरकर उन्हें पूर्ण करती हैं। बालक जन्म से ही परिवार में भाषा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज आदि इन सभी चीजों के बिना वह समाज के सदस्य के बीच अपनी उपर्युक्तता साबित करने में असमर्थ रह जाता हैं। अतः परिवार का बालक के लिए महत्वपूर्ण स्थान हैं क्योंकि धीरे-धीरे परिवार में ही बालक का सामाजीकरण होता हैं परिवार के बाद बालक का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता हैं। यह बालक को समाज का वास्तविक सदस्य बनाती हैं। वस्तुतः वर्तमान परिस्थितियों में विद्यालय ही एक मात्र साधन हैं जो लोकतांत्रिक समाजवादी प्रतिमानों के अनुसार विद्यार्थियों का विकास करती हैं। अतः भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत विद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान हैं। इसलिए परिवार की परिस्थितियाँ, विद्यालयी वातावरण, एकाग्रता, मूल्यांकन आदि का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता हैं।

समस्या का औचित्य

राजस्थान शैक्षिक व आर्थिक दोनों ही दृष्टि से कई राज्यों से पिछड़ा हुआ है। अतः यहाँ के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु उनमें अध्ययन संबंधी आदतें व मनोवृत्ति विकसित करना विद्यार्थी जीवन व राष्ट्र दोनों के लिए उपयोगी है। औपचारिक शिक्षा की प्रभावशीलता के मूल्यांकन का आधार विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि है।

विद्यार्थी का परिवार, समाज व विद्यालय शैक्षिक प्रक्रिया संरचना के घटक हैं। इन तीनों घटकों व अन्तः संबंधों का सहारा लेकर विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि फलीभूत होती है। विद्यालय वातावरण एवं अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को उच्च बनाने हेतु तथा विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम की आन्तरिक व बाह्य मूल्यांकन में सुधार हेतु यह शोधकार्य नितान्त आवश्यक है। प्रत्येक परिणाम का एक कारण अवश्य होता है और प्रत्येक कारण का एक प्रभाव किसी भी प्रभाव की उत्पत्ति कुछ कारणों पर निर्भर करती है। परिवार, समाज और विद्यालय की शैक्षिक प्रक्रिया ही विद्यार्थी के त्रिआयामी संरचना के घटक हैं। इन तीनों घटकों की परस्पर अन्तःक्रिया व अन्तःसंबंधों का सहारा लेकर विद्यार्थी का उपलब्धि स्तर फलीभूत होता है।

विद्यार्थी देश का भविष्य होते हैं। उन्हीं के कंधों पर देश के भविष्य के संचालन का कार्यभार होता है। अतः उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास होना चाहिए। यदि विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास के लिए समुचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं की जाएगी। तो वह अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाएंगे। भारत के भविष्य एवं विद्यार्थियों की शिक्षा के संबंध में कोठारी कमीशन (1964-66) में कहा गया कि, “भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।”

अतः विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुये उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा उनकी अध्ययन आदतों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

समस्या कथन

“कोटा शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।”

A Study of the effect on educational achievement of study habits of Senior Secondary level Students of Kota City

शोध उद्देश्य

1. शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध का परिसीमन

समस्या के सही एवं विशिष्ट अध्ययन के लिए समस्या का परिसीमन

आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक कार्य की कुछ परिधी व सीमाएँ होती हैं। किसी भी समस्या के क्षेत्र को सीमित करना आवश्यक हो जाता है। अनुसंधान प्रक्रिया में अनिश्चित परिणामों तक पहुँचने हेतु तथा अध्ययन को विश्वसनीय व वैध बनाने के लिए परिसीमन करना आवश्यक हो जाता है जिससे अध्ययन में सुविधा रहे। समय व शक्ति की बचत को देखते हुये शोधार्थी ने शोधकार्य के परिसीमन के अन्तर्गत -

1. **क्षेत्र:** प्रस्तुत लघुशोध कार्य कोटा शहर तक सीमित रखा गया है।
2. **स्तर:** प्रस्तुत शोधकार्य उच्च माध्यमिक स्तर विशेषतः 11 व 12वीं के विद्यार्थियों पर किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया है, जिसमें शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालय के 40 छात्र एवं 40 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण करना जरूरी होता है क्योंकि एक ही शब्द भिन्न अर्थों में परिभाषीकरण किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयुक्त की जाने वाली पारिभाषिक शब्दावली का स्पष्टीकरण आवश्यक है।

1. **उच्च माध्यमिक स्तर:** विद्यालय का वह स्तर जिसमें विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार वर्ग एवं विषय का चुनाव करके अध्ययनरत रहते हैं। विशेष रूप से कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थी विद्यालय के इस स्तर पर अध्ययन करते हैं।
2. **शहरी क्षेत्र:** वह क्षेत्र जिनका जनसंख्या घनत्व उनके आस-पास के क्षेत्रों की तुलना में अधिक और जहाँ मानवीय सुविधाओं की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में होती है शहरी क्षेत्र कहलाते हैं।
3. **अध्ययन आदतें:** आदत जन्मजात नहीं होती है। आदत अधिगम द्वारा निर्मित स्थायी व्यवहार है। यह अर्जित है। शिक्षा के क्षेत्र में आदतों का विशेष महत्व है क्योंकि शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों में से एक उद्देश्य बच्चों में अच्छी आदतों को विकसित कर उनके चरित्र का निर्माण करना है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

परीक्षणों की सहायता से संकलित किये गये आँकड़ों से प्राप्त सूचनाएँ जटिल असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होती है। इन सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इन्हें निश्चितरूप प्रदान करना आवश्यक है। इस हेतु सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी-परीक्षण

परीक्षण परिकल्पना

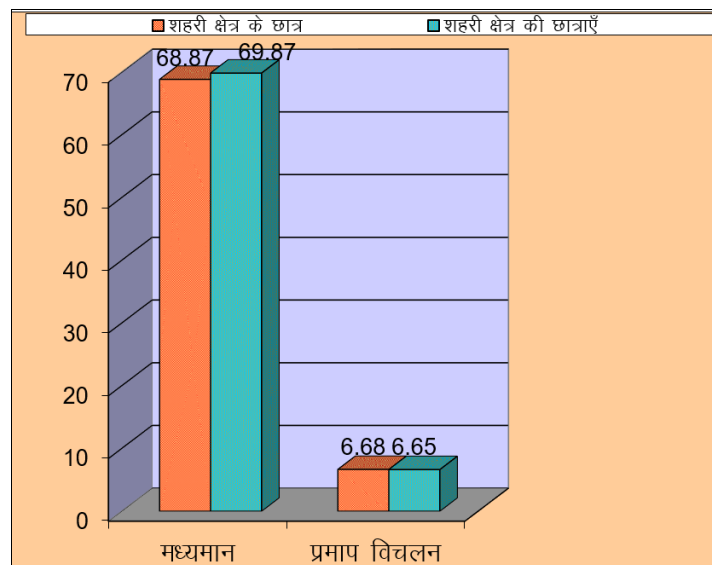
शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 1: शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य में सार्थकता का अन्तर

समूह	न्यादर्श	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी-मूल्य: (t-value)	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्र के छात्र	40	68.87	6.68	0.45	0.05
शहरी क्षेत्र की छात्राएँ	40	69.87	6.65		

$$df = N_1 + N_2 - 2 = 40 + 40 - 2 = 78$$

$$df = 78 \text{ पर } 0.05 \text{ का मान} = 1.99$$



आरेख संख्या 1: शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान तथा मानक विचलन में सार्थकता का अन्तर आरेख द्वारा प्रदर्शित

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी संख्या -1 के अनुसार शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान क्रमशः 68.87 व 69.87 है तथा प्रमाण विचलन क्रमशः 6.68 व 6.65 है। प्राप्त टी का मान 0.45 है जो स्वतंत्रता के अंश (df) 78 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीय मान 1.99 से बहुत कम है।

निष्कर्ष:

अतः शून्य परिकल्पना शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं होता है, को स्वीकृत किया जाता है। चूंकि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमानों की तुलना करने पर उनमें अधिक अन्तर नहीं पाया। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

1. विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन संबंधी आदतों की समय सारणी का निश्चित रूप तैयार करना ताकि शैक्षिक उपलब्धि में सुधार किया जा सके।
2. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के विकास के लिए विद्यालयी स्तर पर कक्षा-कक्षा के बाद मित्र समूह में कठिन प्रसंगों पर चर्चा-परिचर्चा आदि की व्यवस्था कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को बढ़ाया जा सके।
3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें सुधारने के लिए शिक्षकों व अभिभावकों को सहयोग करना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकार्य कभी समाप्त नहीं होने वाली प्रक्रिया है। किसी भी शोधकर्ता के लिए यह संभव नहीं है कि उसने विशिष्ट समस्या के

सभी पक्षों पर कार्य कर लिया है इसलिए शोधकर्ता ने भावी अनुसंधान के संदर्भ में अपने सुझाव व्यक्त किये हैं शोधकर्ता ने कोटा शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन समस्या को लेकर शोधकार्य किया। शोधकर्ता द्वारा भावी शोध हेतु सुझाव निम्न बिन्दुओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

1. भावी अध्ययनकर्ता यदि इसमें बड़ा न्यादर्श लेकर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करे तो निष्कर्ष और अधिक विश्वसनीय सकते हैं।
2. यह शोधकार्य केवल शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किया गया है इसके अन्तर्गत यह शोधकार्य निजी विद्यालयों से विद्यार्थियों के छात्रों पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ सूची:

1. डॉ. रैना, रीता शैक्षिक मापन एवं सांख्यिकी
2. डॉ. श्रीवास्तव डी. एन. सांख्यिकीय एवं मापन अग्रवाल पब्लिकेशन हाउस, बॉम्बे
3. कपिल, एच.के. मनोविज्ञान में सांख्यिकी
4. कोकरन, डब्ल्यू. जी. सेम्पलिंग टेक्निक्स एशियन पब्लिकेशन हाउस बॉम्बे
5. गुड, डब्ल्यू. के. मेथड्स ऑफ रिसर्च, मैकग्रहिल न्यूयॉर्क
6. सक्सेना, सरोज शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार साहित्य प्रकाशन, आगरा
7. राँय, कमलेश एवं सहारन इण्डियन एजुकेशन एब्सटैक्ट एन.सी.आर.टी. दिल्ली
8. नागर, कैलाशनाथ सांख्यिकीय के मूल तत्व
9. स्कीनर, सी.ई. एजुकेशन साइकोलॉजी
10. अग्रवाल आर.एन. मुखीजा रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशियल साइन्सेस
11. शर्मा, आर.ए. शिक्षा तकनीकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ

Journals

1. Bulletin of Education & Research. 2006; 28(1):35-45.
2. Education, 2009; 3-1337(3):269-285.
3. Educational Science, Theory and Practice. 2014; 14(5):1721-1727.
4. Turkish online Journal of Distance Education. 2014; 15(21):91-97.
5. International Journal of Emerging Research in Management and Technology. 2015; 4(10):7-13.
6. International Journal of Educational Administration and.
7. International Journal of Educational Administration and Policy Studies. 2015; 7(7):134-141.
8. Journal of Education and Practice. 2016; 7(10):19-24.
9. Journal of Research & Reflections in Education (JRRE). 2017; 11(1).
10. Journal of Educational Psychology Proposition & Representations. 2017; 5(1):101-127.
11. Journal of Educational Technology & Society. 2015; 18(2):323-335.
12. Journal of Learning Analytics. 2016; 3(3):318-330.

Websites

- <https://www.google.com>
- <https://www.wikipedia.com>
- <https://www.shodganga.com>
- <https://www.vidhyanidhi.com>